

RANIGANJ GIRL'S COLLEGE 1ST YEAR WATER POLLUTION

NAME : BARSA DEY

ROLL NO : BA394

CATAGORY: Political Science (H)

REG. NO. : 113211210230

Course Name: Environment Studies

Semester: 1st Sem.

Session : 2021-22

8/3/2

Raniganj Girls' College

Course Name: Environment Studies

Course Code: AEE101

Topic of the project: Water pollution

A Project Report

Submitted by Semester-I students (Academic Year 2021-22)

Name of the student	Registration Number	
PUJA KUMARI MAHATO	KNU113211210040	
ARPITA SINGH	KNU113211210104	
NISHA MUKHERJEE	KNU113211210231	
PRIYA ROY	KNU113211210070	
DIPALI KUMARI BURNWAL	KNU113211210064	
NANDINI SHAW	KNU113211210189	
SHAMA PARWEEN	KNU113211210215	
SAKINA PARWEEN	KNU113211210246	
INDRANI NAG	KNU113211210250	
BARSHA DEY	KNU113211210230	
SUNITA GHOSH	KNU113211210087	
SWETA SINGH	KNU113211210247	
PUJA MAJI	KNU113211210185	
SANDIPA SHIT	KNU113211220031	
SUSHAMA BHUI	KNU113211220033	
SHREYA SADHU	KNU113211220046	
NARGIS KHATUN	KNU113211210216	
CHAITALI LAYEK	KNU113211210227	
ANCHAL KUMARI	KNU113211210178	
SUMAN KUMARI	KNU113211210236	
SUNITA MONDAL	KNU113211210147	
SMRITI GOPE	KNU113211210206	
RUSNA KHATUN	KNU113211210140	
JYOTI KUMARI SHAW	KNU113211210166	
LAXMI KUMARI HARIJAN	KNU113211210243	
USBA NAAZ	KNU113211210135	
AFSANA KHATUN	KNU113211210241	
RITU MANDI	KNU113211210136	
NANDINI SHARMA	KNU113211210143	
SHILA TUDU	KNU113211210172	

CERTIFICATE

This is to certify that this project titled "Water pollution" submitted by the students for the award of degree of B.A. Honours/ Program is a bonafide record of work carried out under my guidance and supervision.

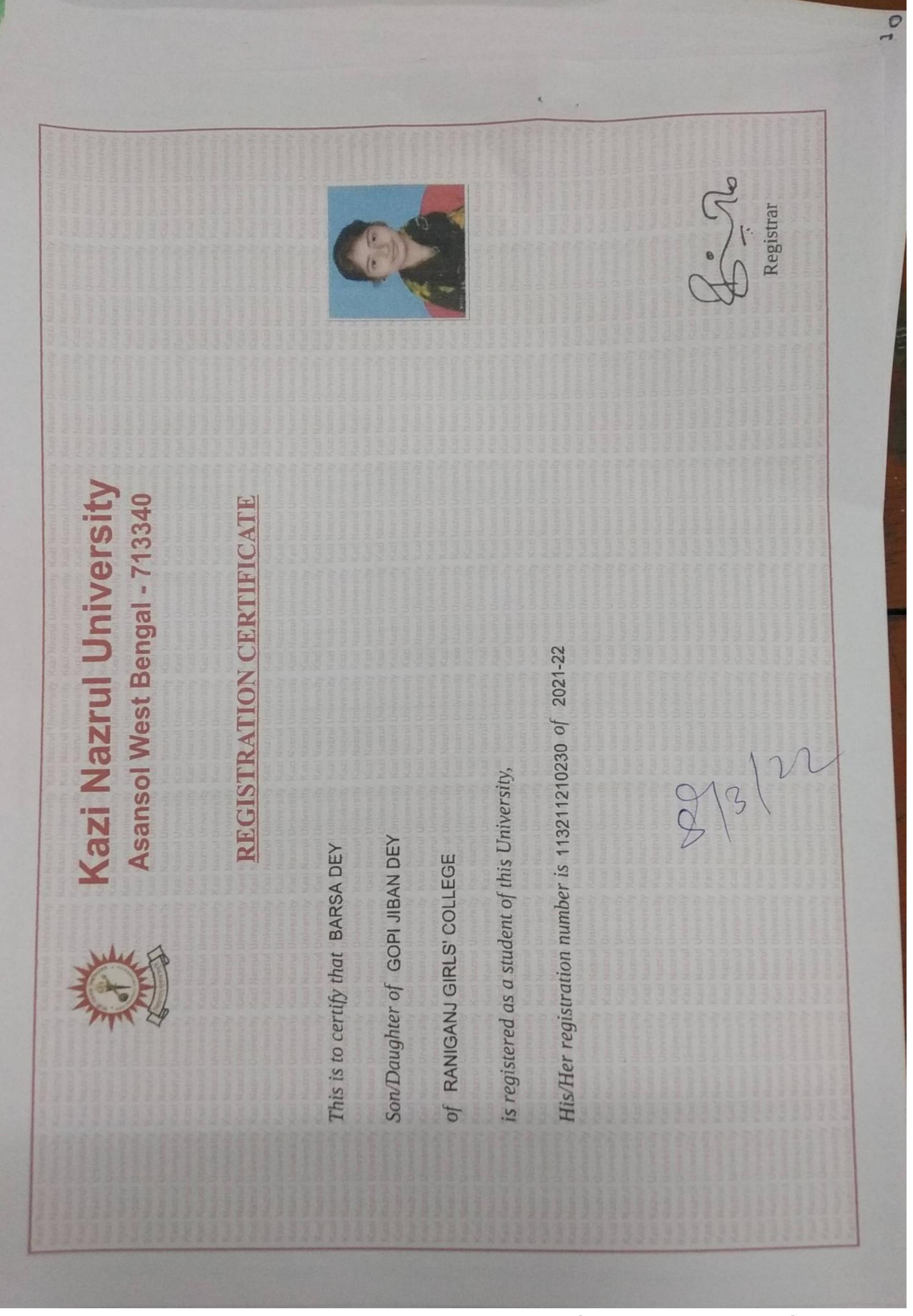
Name of the student	Registration Number	
PUJA KUMARI MAHATO	KNU113211210040	
ARPITA SINGH	KNU113211210104	
NISHA MUKHERJEE	KNU113211210231	
PRIYA ROY	KNU113211210070	
DIPALI KUMARI BURNWAL	KNU113211210064	
NANDINI SHAW	KNU113211210189	
SHAMA PARWEEN	KNU113211210215	
SAKINA PARWEEN	KNU113211210246	
INDRANI NAG	KNU113211210250	
BARSHA DEY	KNU113211210230	
SUNITA GHOSH	KNU113211210087	
SWETA SINGH	KNU113211210247	
PUJA MAJI	KNU113211210185	
SANDIPA SHIT	KNU113211220031	
SUSHAMA BHUI	KNU113211220033	
SHREYA SADHU	KNU113211220046	
NARGIS KHATUN	KNU113211210216	
CHAITALI LAYEK	KNU113211210227	
ANCHAL KUMARI	KNU113211210178	
SUMAN KUMARI	KNU113211210236	
SUNITA MONDAL	KNU113211210147	
SMRITI GOPE	KNU113211210206	
RUSNA KHATUN	KNU113211210140	
JYOTI KUMARI SHAW	KNU113211210166	
LAXMI KUMARI HARIJAN	KNU113211210243	
USBA NAAZ	KNU113211210135	
AFSANA KHATUN	KNU113211210241	
RITU MANDI	KNU113211210136	
NANDINI SHARMA	KNU113211210143	
SHILA TUDU	KNU113211210172	

Place: Raniganj

Date: 18.03.2022 Assistant Professor, Department of Zoology

Signature of the supervisor with designation and department

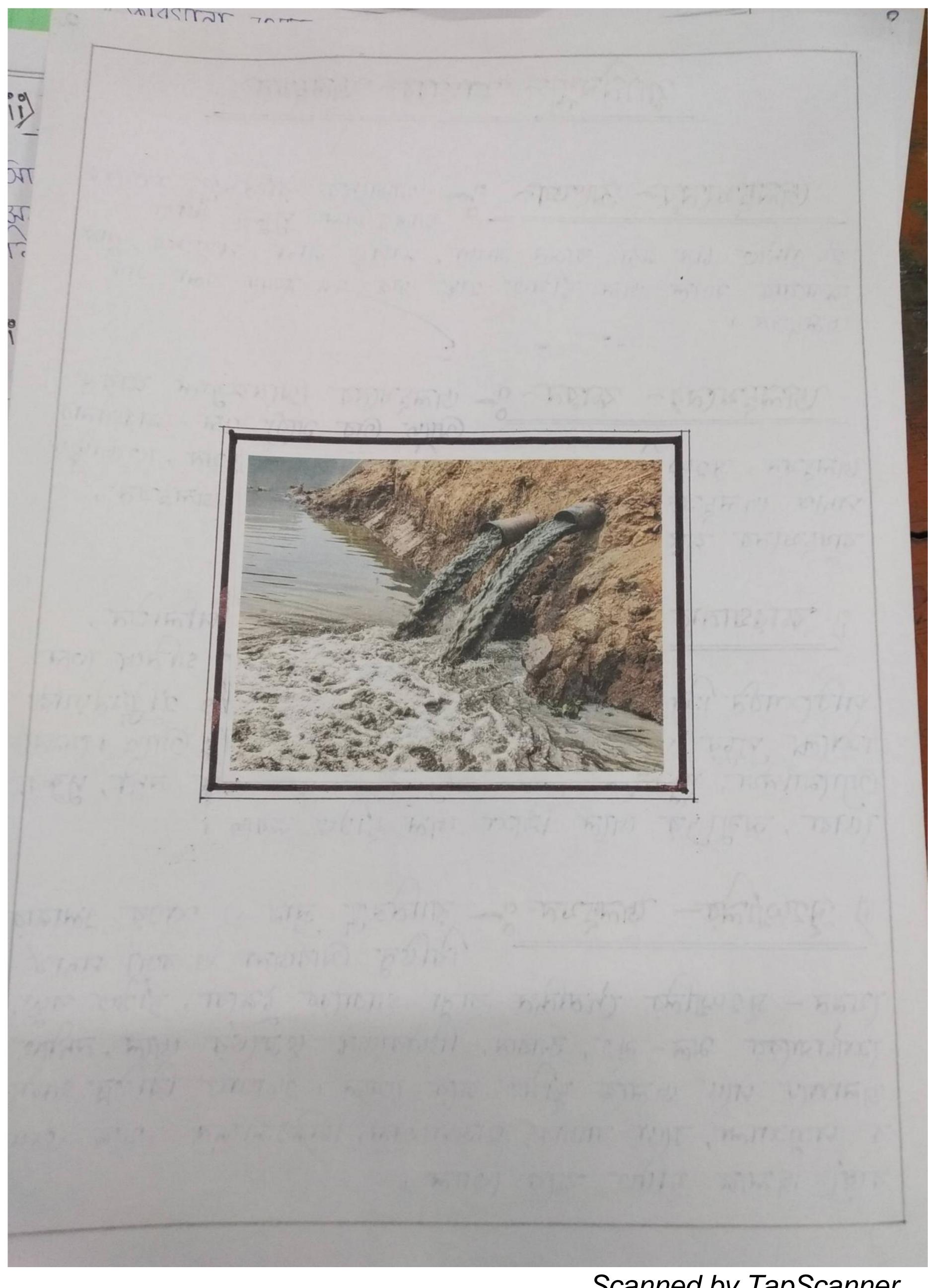
Moremila Pal



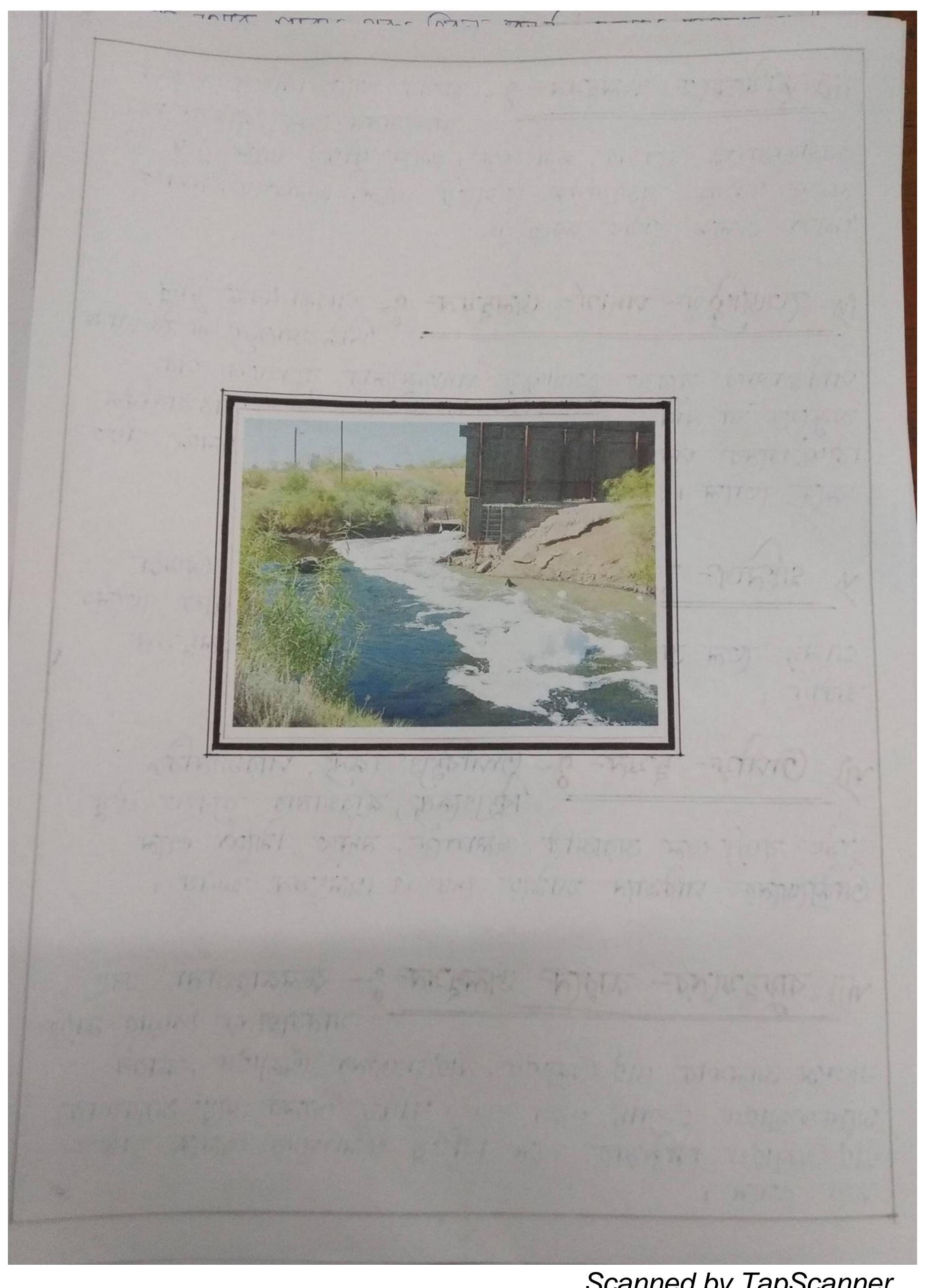
- 18D-	_
	श्रका तष्
i) एम्प्रम्मिप्रे - आक्ता-	2
ं) एम्पर्यापर्- स्थर्य-	2-4
ःः) याप्रमाद्ध- अवद्याद्येव- त्याप्रमाद्य-	14-5
भे अप्रयम्ब अविक- त्यामिमायक- य्रिक्टाक-	5-6
विष्युष्टे आर्थिन व्यास्थान राषाण्य	- 6-7
b) Dealson- Aprili-	8
213/22	



यान्याष्ट्र - व्यायाष्ट्रमतन 1(3) 11X R 5 उत्मिम् वि भाष. यथा आजप जाला, क्षामवे झारा भाष लीप अध्याव ज्याप नाम न्याम न्याम न्याम ज्याम जाम त्यासम्भत् । त्रिध्यद्वेत्राध्ये उथाव्यः ० त्रायद्वेत्राध्ये व्यव्याव्येत्य अवव्य ल्याकि लाव जावी. उथ - स्थवहप्याक ताप्परिमय, भेरतल्यापुष्ये ताप्परिमय, क्रियातिकार्त, ताप्परिमय, रितातिकार ख्याज् त्याष्ट्रमेष ' राष्ट्रता किष्णे. त्याष्ट्रमेष. ' क्ष्यांत्रमेष.' अगिरिम्पिक उथिवय त्याप्रीमय । ी सावंशापके कथ्मेन्य- है आहेर वाजामिक अधिवार विका व्याकृतियायुन- गुव्याप्य ' स्मित्य क्षण्य गापकाइन जवक कृषिन्यं गायुन गुज्याष्ट्र क्षितं अपृत्याप द्राक्तः यात्राम्युष्ट अमार्य, त्यात्र व्यक्ति । क्रिय-लग्नियात्या, दिनाद्रेय कियम क्रियम न्याम. - राष्ट्र, खिन, तमी, येडेवे निवार भाषा विवास विवास निवास निवास स्थित । मित्र प्राप्त कार्य के जात्या के अवस्था के अव निजय- र्रेडलीपुर्व क्षिप्पुत यादी हावादिव हैस्थि, देवुरू उति: विमारामाविक अप- र्रो. आवाप' क्रिक्किवित्र है से कि विक्र क्षिण भीन त्राष्ट्राध्यतं थतं. त्यापक देत्रक. थांव विवाय । उत्प्रावेदः सुदुर्ध-रपदुर्धः व अधियाष्य वित्र वाकाव वाकाव वाकाव (दिश्वर वाक्षेत्र तिराक दुरुषे यत्ये त्राया दिक्षि द्वायः विपालः



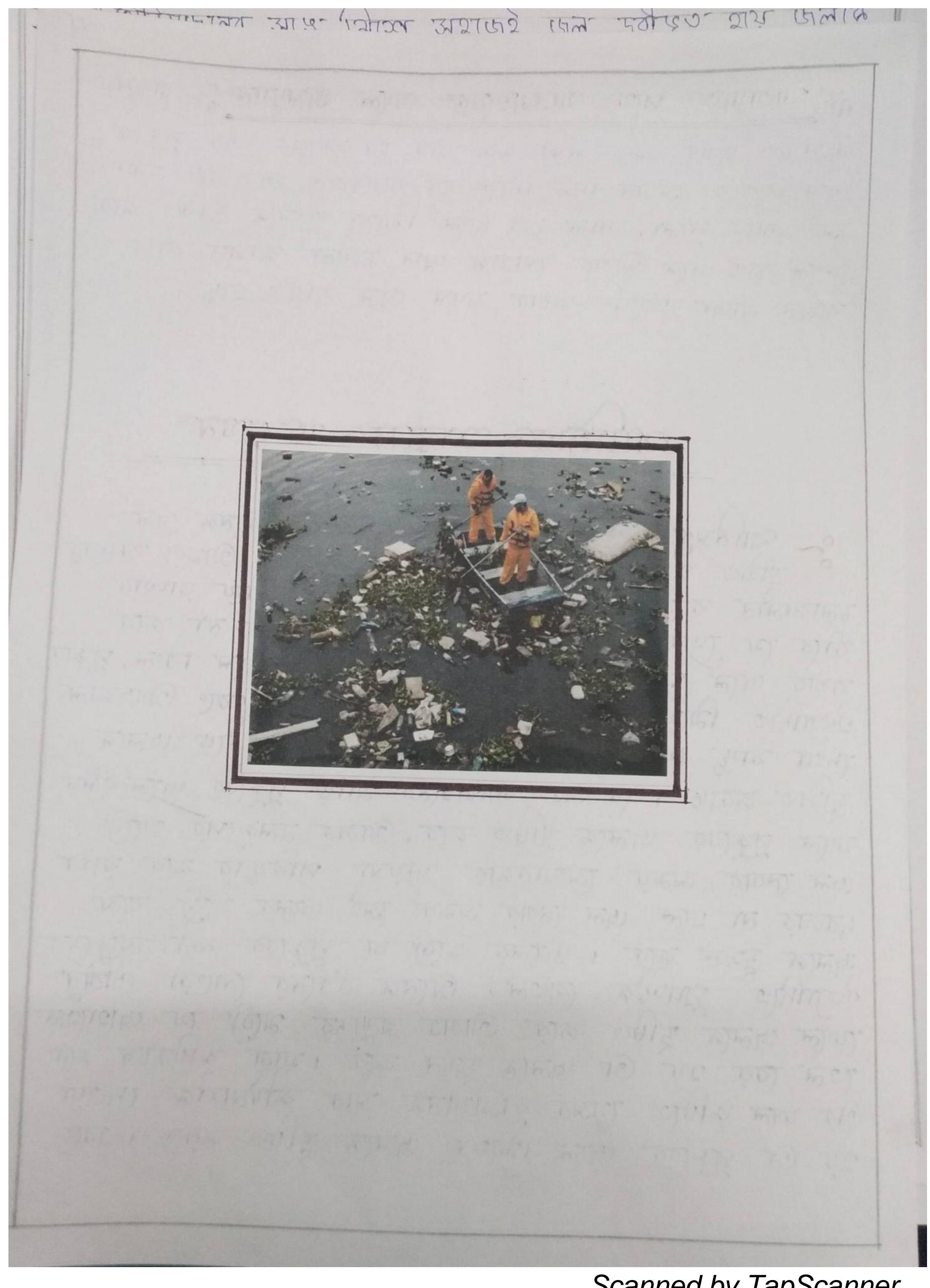
हारी क्षिमित्र- त्यामम् ३- मामिय हिर्गित, सिव्य क्षियां उग्रामिय उग्ने स्थित नामक, ्यायाव्यव्यायाय येव ठाव उथ्वा ठां । ज्यां के प्रिव न्यां क्रींत नइ अभिते खिमाके अंग्रामियुष्ट तैयिद्दे त्यि, व्याप्तां प्रमृति तुम्रीय त्यांक द्वाम्य प्रधिय । ाँगे जिल्लाकिंग- अमार्ग- त्याप्रमप- ० आवजापावक दिल्ले ् १९/१९६ ३३११/१५ वा द्वा द्वा त्या व्यागुरम्प्रमार्थ ग्रीयरेव किलाकिंग स्राम्येनियांच योग्रमांचं थांच अर्जितिक या प्रमृति एक श्रेकेिक किया उत्ते । क्रिया आवे मापायुक् अल्गांशिय था किसिल्वैंग यागाम् लीयः भिष्य स्थित स्थित है। उथि किया ने साप्राप्त- किमप-० लाग्ना किया अर्जितिव लावाकीक विधिय रप्पुंड किया अभिते त्यां एक्टिय ग्रां म्यां त्यां साम मा 313/1/1 ग्री Quyyn- में मध- है विष्यायुरीत. (प्रयो आवं आयायुर्ध ्षिमीहिष्टप्रे, आधाराधा योग्रहत तुर्म मिम्नक असी. त्या अवासानं त्यासानं भ्यासानं भ्यासानं भ्रिया त्याष्ट्रीत्विष्वं व्यावेज्ञापि अयुत्राति भित त त्याप्रदेत्रप उत्प्राते । गं। योगरिमा(पंय- कार्यप्य त्याप्रमान :- कप्रकावहाप्य प्रा मापद्मार्थियं द्रुणांव माश्रीम यान्तांत अपप्रमांत ताव लाष्ट्रीवृतः, यावृद्धालात्व लाष्ट्रावृतः, स्वायंत्र अधिवालाक्षीवित वैत्याम त्या वर्त । क्रिक्ट लियं आसे. अपयाताव तार ठाखाइत सुक्षिमां राष. सुखिय. सुखिय. स्थायतांत्र तथ्याक रेक्टि.



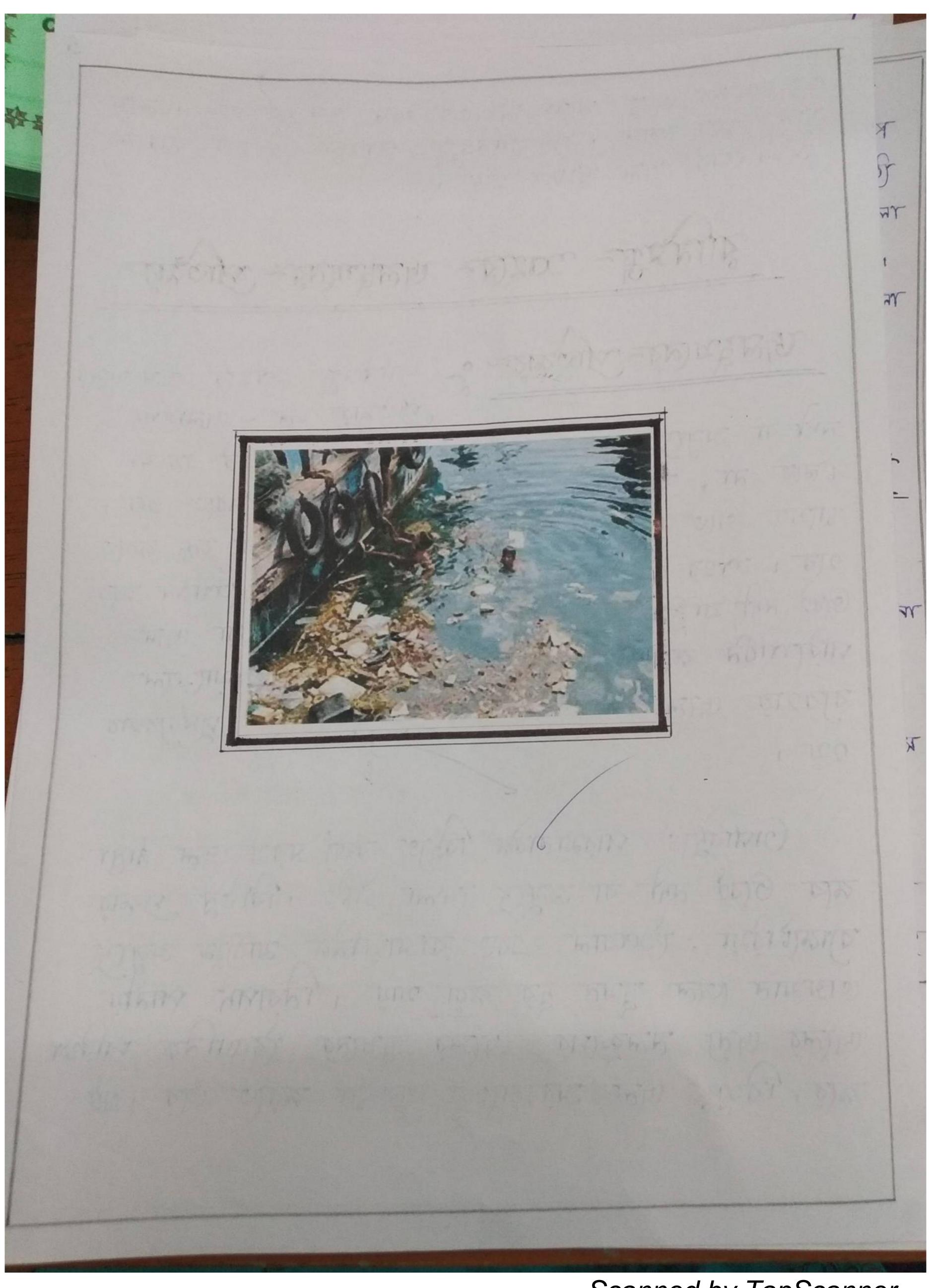
वास्त्र माला में में अवां माला तथा में किए में । मिला क्षित्र क्षित क्षित्र क्षित क

्रीपुष्टि ज्याविक स्थान्त्र

े राष्ट्रिक असि उंडे यायायी आवेष उच कि भागवा डालिलं जै आप्रयोध आविष्ट असि आधि आधि असि १ प्राप्तामुप आला जानमान प्राप्त जान जान जान जान अम्य लाभ क्षित्र किथित लिखी प्रमीत उ राग्न क्षित के राग्न क्षित के किथि युरोपार्गिक व्राविध सम्बास देविक अधिक किरीमार उठा६ व्यात्मासाम भिराप जाति कि ध्रमानुद्ध त्युव अग्रित त्यां त्यां त्यां त्यां दीक्रा प्रवितः, कि अव जापवार्जिय भाषे प्रकेषिव विक्रियं ग्रीय योष्टितं त्रापाक द्राकृत क्षिंव ' लावाव प्रपर्वित्रां गिरि त्यप्त (प्रवाव अभी असापक्षावे त्यानेस अप्रेसीव श्रीत व्यारा भेवडसां प्र उप्प विषय विषयां आगां आगं विषयं मिश्चि अशि अशि लियांक रेमप खिंद । त्यांयां माशि वा बिक्विवं अमेर अमेरिव उत्राम्मीत, समलुष ' घाठाय, जायर युव्यायर प्राण्ये किञ्ज लिया देवित. अवि लाग्नाव अभीते अधि, कि लाग्निव किथ, किं उत ता ता ता किया देश हैं । मावा के। के। किवा कि ्रांक मीय. केष्मिक जिल्ला जाला जाला जाला कार्य प्रमुख आवे क्ष्मिक प्रमुख प्रमुख प्रमुख उंत हा ब्रिक्टिंग त्यांच व्रिया त्यांच है। कर प्रधार 1 ज्यां



व्यक्तिविधा आहे. एक्टीय आविवा ताय, त्रेयुरेत, ठीत त्याया म्रिक्ट अस्त क्षित्र । एवं अपभुष्यक वित्र वर्ष या प्रावेदिक (सहाप्ताव तथा में किंग ग्रह्मां अप्रमुख्य ज्यायक प्राच्या ज्यायक क्रिक्ट त्याप्रमिष्ये-अक्षिक्षेत्र है आप्रमि अवह अवस्थि। अधूर अर अवितिक लीप विर्वादिक लायक अध्वादम् अर्थात्रमुके किया ्रिलाव प्रत, अध्यतं अध्यात १ व्याव प्रत व्याव वर्ष देखित व्याव । ्रागिव विगित विग्विष्ठिक अपुर प्राध्यक आरो पित्र में अपित जीय । ज्याने वि अधारेशपांच माने वित्ये वित्ये वित्ये वित्ये लिये प्रमु या अजिति किया तुर्हत । जीवव्य क्षा तियsiglaugy sela Bysissia vila sela samiliaalsonie muy 00 oursule ou mer sella dystosia 2751 Quyuar 22 अवंशापायहार विमेट असी मंद्रमा त्या भीता अधिर एखियु चार्य आरिति किया दुरिश्च । अपूरिय खेडणाव जीकरित्रकेंग्रें , देव्यवाष्ट जवढ वाशाज्ञापुर आश्चित वार्जित वासमाप विषय देंगप देंद अधा गारे ' एप्यायर यापूरे ला(पर्वे ता.ची. प्रप्रकेशिवं त्यांपर्वे मेत्राधवं द्वाप्त्रे त्यांत्रेश्य अध्य , युजीस लाप्त अवववारिक क्रिका अध्योत अवित जीव । जव



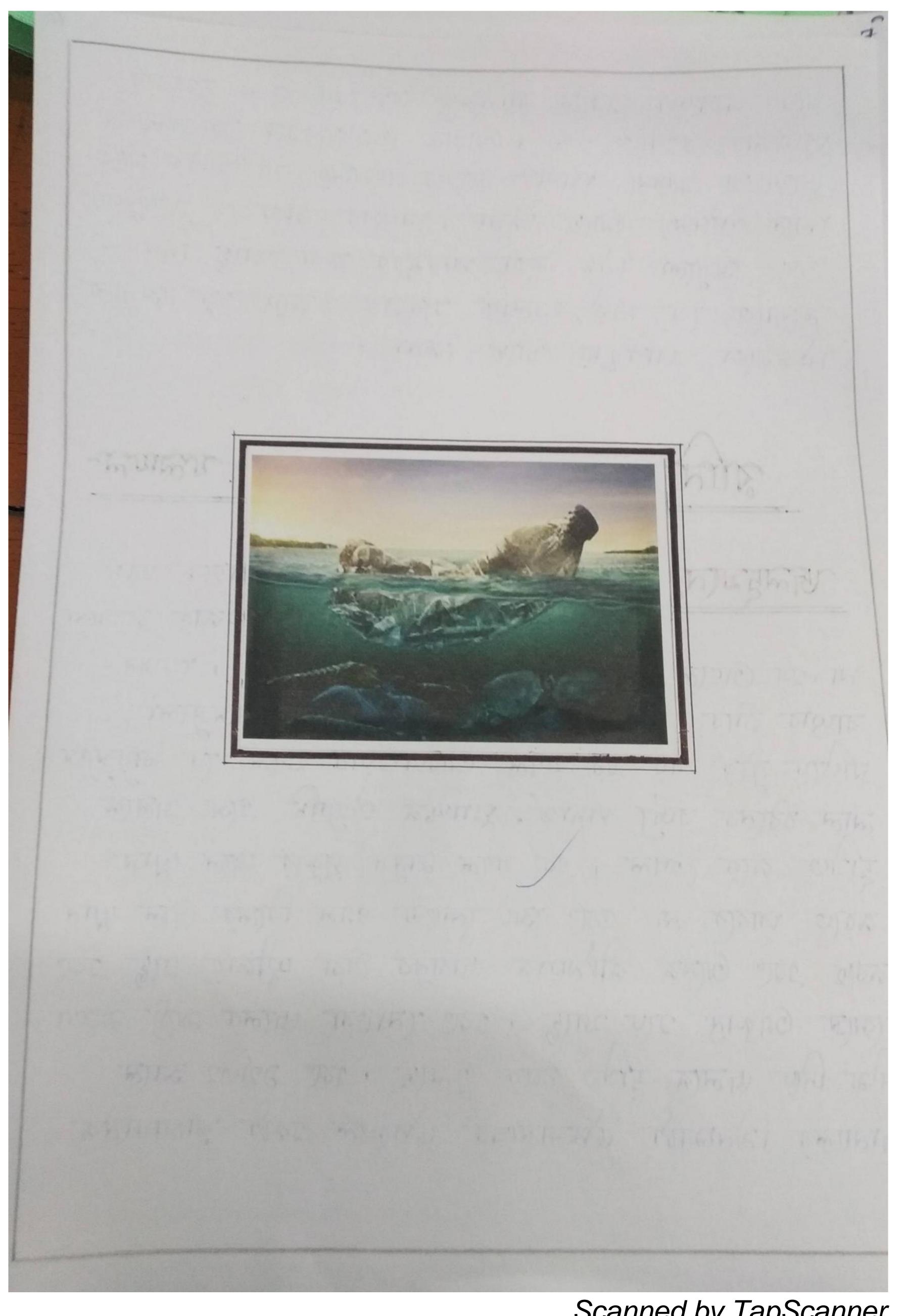
Scanned by TapScanner

क्रिज्ञािक ति भातें ' उप्यक्ति एक्ष्य । क्रिज्ञािक ति भातें ' उप्यक्ति कोवठाके अध्ये उने अधिष्य क्यािक अधिष्य एक्ष्य भावे स्यक्षित क्ष्ये जािश्चित्र क्ष्ये । स्थिति या क्षित्रेमी स्थाप्त सिप्ये दृश्ये उठ एमुद्रेम माक्ष्य सिन्ये प्रमािक उपि क्ष्ये । व्यक्षेत्र स्थाप्ते अविश्वे अवि सिन्ये क्षेत्रेम स्थाप्ते स्थाप्ते प्रमािक विश्वे अवि सिन्ये वे वे वे विश्वे वे विश्वे वे विश्वे विश्वे अवि

याप्रमाही ज्यायदी स्थान्य मायाप्र

त्यप्रदेम(पर्क काप्याप्त ° व्याप्यप्रदे आविव स्थाप

माजाकि शिवाशाहा दुस्यायिकं दुस्केष्टि, उक्का जायगंतुक् क्रिंग भूते सम्पक्ष र्याक्रक क्रिके विष्यति । उठि १००० याप्ति विराम लाकारी, उति जाि । उठि प्रिमिकंग स्मिष्कं अशि, अञ्चा अवित खाविक प्राप्ति आप्रेस स्मित्रों खेरा लीक्ष्यं सिक्त लाप्त क्ष्यंति खाविक प्रता उठि शिव प्राप्ति खाप्ते खाण्यं सिक्त लाप्त क्ष्यंति खाविक प्रता उठि शिव प्राप्ति आविक अर्थेकं सिल लीप्त स्मित्रों क्षितं याते चंत्र काप्ति लावक उत्तावं क्रिंगिल यात्रावं श्रुवं क्रिया वाप्ते व्याप्ति खाविक आविक आविक आविका यात्रावं श्रुवं क्रिया वाप्ति वित्राव वाप्ते वित्राव यात्रावं श्रुवं क्रिया वाप्ति वित्राव वाप्ति आविका श्रिकेव आति । त्रिज्ञप —



Scanned by TapScanner

उपांबरप्य रिगिष्ट सारोप नैक. ७३५ असी असी राज्य ठंता ये आधेरीष सावम देसप होता ते वर्षे सुधं लुखे होते. आर्षेत्र ज्या लायन मार्ग गार्ग । देवसायन्ते मिरियं समा क्रियं समा क्रिय किष्य किस कैएपुरित भिन्ना उत्। क्रिये खाष्ट्रियापि त्रापुत्य विश्व यावंती. तुर्वापादंवं त्यां विश्व विभिन्न विभिन ज्ञामीतृत्य यापुरं अँग जंग लागं लिया गणं लाभि मया मुद्रेश भुरिंग जेयद त्याप्य दीम्यत. क्षित कियाप्य जिस त्याप्यप अबि आवित्रिव अधि अधिष्यं ' द्वाव्यतिवत ' जाउपर व्याजाक्तं ज्जीएमंत्र जिय भिरार जारे।

उद्या- क्षीकार्ड-

व्याज्ञा अवाद केळळ ।

व्याज्ञा अवाद केळळ ।

प्रांचा गणं । पेंच गण्य Wiss — जिम्मिका खाय्ये क्यांक
क्यांक क्रिका क्रुवांक सम्प्रिक व्यापात आणं वा अवाक्रक
व्यायाल उद्ये अव क्यांक्य व्यापात स्थांक व्यापात स्थांक क्यांक
व्यापाल प्रांचा प्रांचा व्यापात क्षांचा क्षांचा क्षांचा क्षांचा
व्यापाल प्रांचा व्यापाल व

1000 / NOW /